यूको संगम

प्रधान कार्यालय की त्रैमासिक ई-पत्रिका

वर्ष - 1; अंक 4

जनवरी –मार्च , 2022

यूको बैंक UCO BANK

(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

संरक्षण एवं प्रेरणा

सोमा शंकर प्रसाद

एमडी एवं सीईओ

अजय व्यास

कार्यपालक निदेशक

इशराक अली खान

कार्यपालक निदेशक

दिग्दर्शन

नरेश कुमार

महाप्रबंधक

मा.सं.प्र., का.से., प्रशिक्षण एवं राजभाषा

संपादक

अमलशेखर करणसेठ

मुख्य प्रबंधक-राजभाषा एवं प्रभारी

सहयोग

सत्येन्द्र कुमार शर्मा

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

रोशनी सरकार साव

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

राम अभिषेक तिवारी

प्रबंधक (राजभाषा)

प्रकाशन एवं संपर्क

यूको बैंक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, 10, बीटीएम सरणी, कोलकाता - 700001

अनुक्रम

विषय-वस्तु	पृष्ठ सं.
संपादकीय	3
बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सोमा शंकर प्रसाद का कार्यभार ग्रहण :	4
बैंकिंग वार्ता	5
बैंकिंग आलेख	6-9
प्रधान कार्यालय में स्थापना दिवस समारोह	10-12
प्रधान कार्यालय में गणतन्त्र दिवस समारोह	13
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ	14-15
तिमाही के हिन्दी साहित्यकार	16-17
तिमाही के विशेष व्यक्तित्व	18
तिमाही के तेलुगु साहित्यकार	19
तिमाही के बंगाली साहित्यकार	20
युवा दिवस	21-22
नेताजी जयंती	23
विश्व हिन्दी दिवस	24-25
अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस	26-27
जी डी बिड़ला व्याख्यानमाला	28-29
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस	30-31
प्रेरक प्रसंग	32-33
हिन्दी कार्यशाला एवं संगोष्ठी	34 26
स्वास्थ्यनामा	35-36
प्रधान कार्यालय में होली मिलन समारोह	37
विदाई	38

संपादकीय

प्रिय सुधीजन ,

यूको संगम ई-पत्रिका का चौथा अंक आपके सामने प्रस्तुत है। मुझे पूरा विश्वास है कि दूसरे अंकों की तरह यह अंक भी आपके मन को भाएगा। इस पत्रिका का मूल उद्देश्य अपने बैंक में तिमाही के दौरान सम्पन्न गतिविधियों से अवगत कराने के साथ-साथ आपको अन्य बातों की जानकारी देनी भी है।

प्रस्तुत अंक में आपको अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास यूको बैंक) कोलकाता द्वारा पश्चिम बंगाल में हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने में उनके योगदान के लिए दिनांक 07.03.2022 को प्रख्यात गायिका पद्मश्री श्री उषा उत्थुप को वर्ष 2021-22 तथा वास्तुशास्त्री डॉ सुरेन्द्र कपूर को वर्ष 2020-21 के लिए **विद्यासागर सम्मान** से सम्मानित किए जाने की झलक देखने को मिलेगी।

इसीप्रकार भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएँ विभाग के नियंत्रणाधीन बैंकों, बीमा कंपनियों एवं वित्तीय संस्थानों के कोलकाता स्थित कार्यालय प्रमुखों एवं राजभाषा अधिकारियों के लिए दिनांक 07.03.2022 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला एवं संगोष्ठी भी आपको देखने को मिलेगी।

इस अंक में दिलीप कुमार मृधा, महाप्रबंधक, जोखिम प्रबंधन विभाग, प्रधान कार्यालय द्वारा बैंकिंग आलेख के साथ-साथ बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ पर आलेख आपको इस पत्रिका में मिलेगा। माह के साहित्यकारों के अंतर्गत दो हिन्दी साहित्यकारों तथा तेलगू, बंगाली के प्रसिद्ध साहित्यकारों एवं तिमाही के व्यक्तित्व श्री **मोटूरि सत्यनारायण** का संक्षिप्त परिचय वीडियो लिंक सहित पेश किया किया गया है। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी वीडियो के रूप में इस पत्रिका में समाहित की गई है जो कि एक नवीन प्रयास है। हमें आशा है कि यह अंक आपको पसंद आएगा|

यह पत्रिका डिजिटल है। इसमें दिए गए वीडियो चिह्न पर आप क्लिक करेंगे तो आप संबंधित वीडियो देख पाएंगे। ऑडियो चिह्न पर क्लिक करने से आप उसे सुन सकते हैं।

पत्रिका में किया गया यह प्रयोग एक अभिनव प्रयास है। हमें पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका हमारे पाठकों को काफी अच्छी लगेगी। पत्रिका के बारे में अपनी प्रतिक्रिया/टिप्पणी मेल से दें।

अमलशेखर करणसेठ
मुख्य प्रबंधक-राजभाषा एवं प्रभारी

बैंक के नए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का हार्दिक स्वागत

श्री सोमा शंकर प्रसाद एमडी एवं सीईओ ने 1 जनवरी 2022 को एर्णाकुलम अंचल के अधीन कुन्नमकुलम शाखा में औपचारिक कार्यभार ग्रहण किया।

भारतीय रिजर्व बैंक ने अनुसूचित भुगतान बैंकों, लघु वित्त बैंकों को सरकारी एजेंसी व्यवसाय करने की अनुमति प्रदान की

भारत सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक ने संयुक्त रूप से अनुसूचित भुगतान बैंको और अनुसूचित लघु वित्त बैंकों (SFBs) को कर वसूली जैसे सरकारी एजेंसी व्यवसाय आरंभ करने की अनुमति प्रदान कर दी है। इस व्यवसाय को करने के इच्छुक किसी भी ऐसे बैंक को भारतीय रिजर्व बैंक के साथ एक करार करना होगा, जिसके बाद उसे उल्लेखित उद्देश्य के लिए भारतीय रिजर्व बैंक का एजेंट नियुक्त किया जाएगा। उस बैंक के लिए यह आवश्यक होगा कि वह सरकारी एजेंसी का व्यवसाय करने के लिए एक एजेंट के रूप में अर्हता प्राप्त करने के उद्देश्य से निर्धारित रूपरेखा का अनुपालन करे।

भारतीय रिजर्व बैंक की वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट से खुदरा प्रेरित ऋण वृद्धि में गिरावट के संकेत

भारतीय रिजर्व बैंक की वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (FSR) से यह पता चलता है कि मंद निवेश और अतिशय क्षमता के कारण थोक मांग की गति धीमी हो जाने के कारण ऋणदाताओं ने अपनी ऋण बहियों को खुदरा खंड यथा व्यक्तियों, परिवारों तथा छोटे व्यवसायों की दिशा में उत्साहपूर्वक मुड़कर विस्तारित करने का प्रयास किया। हालांकि, भारत में खुदरा प्रेरित ऋण वृद्धि माडेल को दो कारकों के कारण इस समय अस्तव्यस्तता का सामना करना पड़ रहा है। पहला- उपभोक्ता वित्त संविभाग में अपचार में वृद्धि और दूसरा- नए ऋण खंड, जो कि वैश्विक महामारी के पूर्व उपभोक्ता ऋण वृद्धि को बढ़ाने वाला एक महत्वपूर्ण कारक होता था, में मंदी। विविध ऋणदाता श्रेणी स्तरों में सामान्य उधारदायी मानकों को कठोर बना दिये जाने के परिणामस्वरूप इसके कारण अनुमोदन की दरों में गिरावट तथा उसके साथ ही शेष राशियों की वृद्धि में विमन्दन भी परिलक्षित हुआ।

टोकनीकरण की निर्धारित तिथि जून, 2022 तक बढ़ाई गई

उद्योग के हितधारकों द्वारा टोकनीकरण अंगीकृत किए जाने हेतु 31 दिसंबर, 2021 वाली निर्धारित तिथि तक अनुपालन किए जाने में असमर्थता व्यक्त किए जाने के बाद भारतीय रिजर्व बैंक ने उक्त निर्धारित तिथि को और छः माह तक बढ़ा दिया है। तदनुसार व्यापारियों और भुगतान कंपनियों को व्यापारिक स्थलों पर कार्ड डेटा का निपटान करने एवं टोकनीकरण की प्रणाली लागू करने के लिए 30 जून, 2022 तक का समय मिल गया है। भारतीय रिजर्व बैंक यह भी चाहता है कि उद्योग के हितधारक आवर्ती ई-अधिदेशों (e mandates), समीकृत मासिक किस्त विकल्पों अथवा लेनदेन के उपरांत वाले किसी भी ऐसे कार्य जो कार्ड जारीकर्ताओं तथा कार्ड नेटवर्कों को कार्ड-ऑन-फाइल डेटा को भंडारित करने में समर्थ।

Journey of UCO Bank under PSB Reform Agenda-EASE (Enhanced Access and Service Excellence)

Dilip Kumar Mridha
General Manager
Risk Management

Based on the recommendations made by Whole Time Directors & Senior Executives in '**PSBs Manthan**' in November 2017, the PSB Reform Agenda (EASE-Enhanced Access & Service Excellence) was prepared to ensure prudential lending, improved customer services, Digital Banking, enhanced credit availability, special focus on MSMEs and better governance.

EASE 1.0-For 2018-19.

EASE Reforms Index was created for comprehensive, independent and benchmarked measurement of PSBs in implementing the PSB Reforms EASE Agenda. The first ever Index was published along with the report titled 'EASE Reforms for Public Sector Banks' in February 2019.

The **Six themes** of PSBs Reform Agenda – EASE were as under:

CUSTOMER RESPONSIVENESS: EASE for Customer Comfort.

2. **RESPONSIBLE BANKING**: Financial stability, governance for ensuring outcomes, and EASE for clean & commercially prudent business.
3. **CREDIT OFF-TAKE**: EASE for the borrower and proactive delivery of credit.
4. **PSBs AS UDYAMIMITRA**: EASE of Financing and Bill Discounting for MSMEs.
5. **DEEPENING FINANCIAL INCLUSION & DIGITALISATION**: EASE through near-home banking, micro insurance, and digitalization.

Governance and HR: Capability building, linkage to individual responsibilities and objective evaluation.

These Indexes captured progress made by PSBs on the reforms agenda in the first three quarters of FY18-19.

Our Result of EASE-1.0 for December-2018 and March-2019.

FY 2018-19	EASE 1.0 Rank	Score 55.80	Changes in Score from Dec18
Q3	11th /21Banks	64.10	15%
Q4	9th /19 Banks	71.7	+7.6

EASE 2.0: For 2019-20

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Theme - Clean Banking & Smart Banking			
1	**C= C**lean Credit	1	**S =S**peedy
2	**L= L**everaging Data	2	**M= M**ulti-Channel Reach
3	**E= E**nsuring Accountability	3	**A= A**ccessible & affordable
4	**A= A**ction against Defaulter	4	**R= R**esponsive
5	**N= N**PA recovery	5	**T= T**echnologically enhanced

Responsible Banking	Institution of comprehensive datasets-driven, scoring and categorisation of risk for high-value corporate and MSME loans. Implementation of IT-based early warning signal system. Codification of corporate/MSME loan monitoring on key financial ratios as per covenant orbenchmark sanction ranges. Continuous assessment of probability of default of p-segment and MSME loan-book based on credit bureau data. Validation of internal rating system by comparing actual default vis-à-vis ratings Capital mobilisation and managing investor relations. Improved risk management in treasury and cyber-security.
Customer responsiveness	Measuring turnaround time for select customer services e.g., timely closure of deceased's accounts Tracking fee income from third party products Availability and up-time of self-service machines
Credit-off take	Dedicated sales channels for personal loan outreach. Increasing EASE of availing export credit –**Credit-off take** centralization of processing.
PSBs as UdayamiMitras	Relationship managers for MSME accounts. Offering online status tracking and email/SMS facility for MSME loan applicants.
Financial Inclusion & digitalization	Setup of Central processing centers for rural loans. Penetration of micro-insurance schemes among bank account holders.
Governance & HR	Creation of Individual Development Plans for senior level employees. Implementing robust IT-based HR Deployment Decision Support System. Inclusion of EASE Reforms in APARs of leaders up to WTD – 2 levels.

FY 2019-20	EASE 2.0 Rank	Score	Changes in Score from March 19
Q1	12th / 19 Banks	48.5	+3.89
Q2	12th / 19 Banks	55.7	+11.1
Q3	9th /19 Banks	67.7	+23.1
Q4	11th /19 Banks	68.2	+23.3

EASE 3.0 – Banking of the Future-for the year 2020-21.

Theme- Smart, Tech-Enabled Banking for Aspiring
Smart lending for aspiring India
Institutionalising prudent banking
Tech-enabled ease of Banking
Governance and outcome – centric HR

Action points:

Dial-a-loan for doorstep facilitation
Credit@Click: End-to-end digital retail and MSME lending
Analytics-based credit offers
Tech-enable agricultural lending and export credit
Palm Banking: 30+ services for seamless delivery
EASE Banking Outlets: Banking on the go
Hard-wiring sound banking through IT systems.

FY 2020-21	EASE 3.0 Rank	Score	Changes in Score from March 20
Q1	9th / 13 Banks	53.6	+2
Q2	8th /13 Banks	56.5	+4.9
Q3	7th /13 Banks	65.6	+13.9

EASE 4.0: Technology enabled collaborative and simplified banking:- for the year 2021-22.

New themes introduced in EASE 4.0

- New Age 24x7 banking with resilient technology
- Collaborating for synergistic outcomes

Significant unfinished agenda from EASE 3.0 to continue in FY21-22

- Long-term initiatives, COVID-19 impact
- Foundational capabilities in place, business adoption key priority
- 14 out of 26 proposed EASE 4.0 APs continuing from EASE 3.0 with enhancements

Action points:

Enhanced Dial Enhanced Dial Enhanced Dial -a-loan: Improved access, simplified digital loan application loan and quicker response for retail, and quicker response for retail, MSME , and agricultural loans.

Enhanced Credit @ Click: End to End digitalised retail & MSME loans.

Wider coverage of customer needs and increased credit off take through analytics -based and tech-

Digitally -and data enabled financing of agriculture and allied activities.
Improve customer experience and facilitate the adaption of mobile banking apps.
Increase resilience of technology systems to provide uninterrupted banking services to customers.
Improved cyber resilience for enhanced costumer protection.
Draw up and implement board-approved roadmaps for automation of high volume and manually intensive processes in the Bank
Co-lending with NBFCs: Proactive delivery of credit through a board-approved co-lending process.
Doorstep banking: Improve access to technology-enabled delivery of banking services at customer doorstep
Improved recovery through auctions on the e-B क्रय platform.
Structured on boarding program for new Probationary Officers.

We are committed to improve our performance for 2021-22, by improving digital outlook and technology platform. Our bank has improved its delivery channels and customer centric system driven activities, especially in the area of Credit Risk Assessment, Credit under writing , credit Monitoring through EWS9(early warning systems) and in compliance of various guidelines of Reserve Bank of India, Ministry of finance(DFS) and our Board of Directors.

Under the Digital platform, in Loan management system (LMS) and E-Bikroy, we have done remarkable progress.
We must continue our efforts so that we may achieve the progress and become a Top class bank (within top 5) under EASE agenda.

हिन्दी कार्यशाला

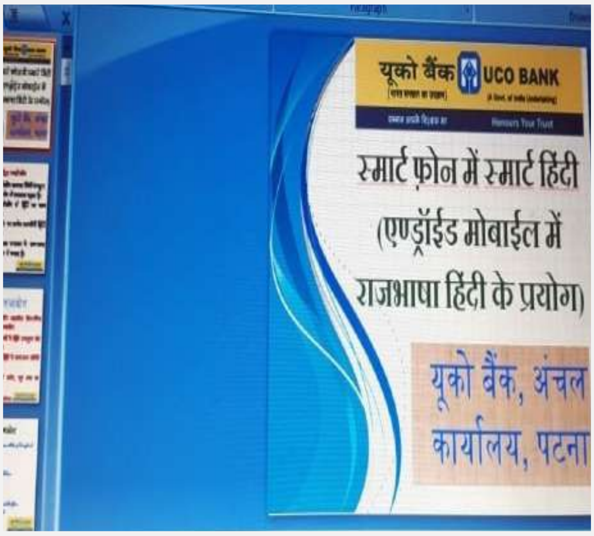

माननीय उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री सुदीप दीघल की अध्यक्षता में यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना द्वारा दिनांक 05.02.2022 को होटल यो चाइना में अधिकारियों के लिए स्मार्ट फोन में स्मार्ट हिन्दी विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

प्रधान कार्यालय में 79 वां स्थापना दिवस समारोह

बैंक के संस्थापक स्व. जी डी बिड़ला जी की प्रतिमा माल्यार्पण करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री अजय व्यास एवं श्री इशराक ली खान

प्रधान कार्यालय में 79 वां स्थापना दिवस समारोह

कार्यपालक निदेशक श्री अजय व्यास एवं इशराक अली खान के साथ अन्य महाप्रबंधकगण गणेश पूजन करते हुए

माल्यार्पण पश्चात श्री अजय व्यास, कार्यपालक निदेशक एवं श्री इशराक अली खान, कार्यपालक निदेशक का संबोधन

प्रधान कार्यालय में 79 वां स्थापना दिवस समारोह

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी का अमृत महोत्सव

गणेश पूजन के दौरान उपस्थित कार्यपालक निदेशक , महाप्रबंधकगण, उप महाप्रबंधकगण एवं अन्य अधिकारीगण

प्रधान कार्यालय में 73वां गणतंत्र दिवस समारोह

26 जनवरी, 2022 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर झंडोत्तोलन के पश्चात एमडी सर संबोधित करते हुए

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

आज़ादी का अमृत महोत्सव

लघु कहानी

श्रीमती शिखा सिंह
कानपुर अंचल

एक बार एक बस जंगल के बीचों बीच बने हुए हाई वे वाले रास्ते से गुजर रही थी उस बस पर बड़े बड़े अक्षरों में लिखा था "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" | जंगल का राजा शेर उस समय शिकार करने के लिए उसी रास्ते के पास से गुजरा और उसने बस पर लिखे उन वाक्यों को पढ़ा| शेर यह सोच कर आश्चर्य में पड़ गया कि आखिर ये ऐसे इस गाड़ी पर क्यों लिखा हुआ है ? इसका कोई तो मतलब होगा। वह ये सोचते सोचते जंगल मे शेरनी के पास पहुंचा और उसने यह बात अपनी पत्नी शेरनी को बताई तब शेरनी ने शेर को इस बात का कुछ अर्थ समझाया ।हुआ यूँ कि जंगल के राजा शेर ने इसका अधूरा अर्थ समझकर ऐलान कर दिया कि अब आज के बाद जंगल की कोई भी बेटी का न कोई शिकार करेगा न ही कोई अनपढ़ रहेगा। हमारे जंगल मे सभी पशुओं की बेटियों के लिए विशेष स्कूल होगा। हर पशु को अपनी बच्ची को स्कूल भेजना होगा। राजा साहब का स्कूल पढ़ा-लिखाकर सबको प्रमाणपत्र बँटेगा।

सब बच्चे चले स्कूल। हाथी की बेटी भी आयी शेर की भी, बंदर की भी आयी और मछली भी, खरगोश बच्ची भी आयी तो कछुआ की भी, ऊँट की भी और जिराफ की भी। फर्स्ट यूनिट टेस्ट एग्जाम हुआ तो हाथी की बच्ची फेल। "किस विषय में फेल हो गयी जी?" बच्ची की माँ ने पूछा। "पेड़ पर चढ़ने में फेल हो गयी, हाथी की बच्ची ।""अब क्या करें?" मास्टरनी ने कहा "ट्यूशन दिलवाओ, कोचिंग में भेजो।" अब हाथी की जिन्दगी का एक ही मक़सद था कि हमारी बेटी को पेड़ पर चढ़ने में टॉप कराना है।

किसी तरह साल बीता। फाइनल रिजल्ट आया तो हाथी, ऊँट, जिराफ सब की सब बेटियां फेल हो गईं। बस बंदर की औलाद फर्स्ट आयी। शेर ने स्टेज पर बुलाकर मैडल दिया। बंदर की बच्ची ने उछल-उछल के कलाबाजियाँ दिखाकर गुलाटियाँ मार कर खुशी का इजहार किया। उधर अपमानित महसूस कर रहे हाथी, ऊँट और जिराफ ने अपनी अपनी बेटीयों को कूट दिया। नालायकों, इतने महँगे स्कूल में पढ़ाते हैं तुमको | ट्यूशन-कोचिंग सब लगवाए हैं। फिर भी आज तक तुम पेड़ पर चढ़ना नहीं सीख पायीं।

सीखो, बंदर की बेटी से कुछ सीखो कुछ, पढ़ाई पर ध्यान दो ।फेल हालांकि मछली भी हुई थी। बेशक़ स्विमिंग में फर्स्ट आयी थी पर बाकी विषय में तो फेल ही थी।
मास्टरनी बोली, “आपकी बेटी के साथ अटेंडेंस की समस्या है।" मछली ने बेटी को आँखें दिखाई। बेटी ने समझाने की कोशिश की कि माँ, मेरा दम घुटता है इस स्कूल में। मुझे साँस ही नहीं आती। मुझे नहीं पढ़ना इस स्कूल में। हमारा स्कूल तो तालाब में होना चाहिये न? नहीं, ये राजा का स्कूल है। तालाब वाले स्कूल में भेजकर मुझे अपनी बेइज्जती नहीं करानी। समाज में कुछ इज्जत है मेरी। तुमको इसी स्कूल में पढ़ना है। पढ़ाई पर ध्यान दो। हाथी, ऊँट और जिराफ अपनी अपनी फेलियर बेटीयों को पीटते हुए ले जा रहे थे।

तभी रास्ते में बूढ़े बरगद ने पूछा, *"क्यों पीट रहे हो, बच्चियों को? जिराफ बोला, “पेड़ पर चढ़ने में फेल हो गयीं है ये सब?" बूढ़ा बरगद सबसे फ़ते की बात बोला, “पर इन्हें पेड़ पर चढ़ाना ही क्यों है ?" उसने हाथी बच्ची से
कहा,”अपनी सूंड उठाओ और सबसे ऊँचा फल तोड़ लो। जिराफ बच्ची तुम अपनी लंबी गर्दन उठाओ और सबसे ऊँचे पत्ते तोड़-तोड़ कर खाओ। ऊँट बेटी भी गर्दन लंबी करके फल पत्ते खाने लगी। बरगद बोला हाथी के बच्चे को क्यों चढ़ाना चाहते हो पेड़ पर? मछली को तालाब में ही सीखने दो न?

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

आज़ादी का अमृत महोत्सव

लघु कहानी

दुर्भाग्य से आज स्कूली शिक्षा का पूरा पाठ्यक्रम और सिलेबस सिर्फ बंदर की बच्ची के लिये ही डिजायन है। इस स्कूल में 35 बच्चों की क्लास में सिर्फ बंदर की बच्ची ही फर्स्ट आएगी। बाकी सबको फेल होना ही है। हम सब इसी सोच के चलते अपनी बेटियों को घर बैठा कर उनको उनके हुनर पसंद काम से वंचित रखते है और उनसे घर के कामों की ही अपेक्षा करते हैं। सोचते हैं कि बेटी है तो क्या करेगी पढ़ कर इसीलिए बेटी की जगह बेटे की इच्छा रखते हैं और उन्हें इस संसार मे ही नही आने देते। जबकि हमे यह पता होना चाहिए कि हर बच्चे चाहे वो लड़की हो या लड़का सबके लिए अलग सिलेबस , अलग विषय और अलग स्कूल चाहिये।

हाथी की बच्ची को पेड़ पर चढ़ाकर अपमानित मत करो। जबर्दस्ती उसके ऊपर फेलियर का ठप्पा मत लगाओ। उसे सिर्फ घर के कामों तक ही सीमित मत रखो। ठीक है, बंदर बच्ची का उत्साहवर्धन करो पर शेष 34 बच्चियों को नालायक, कामचोर, लापरवाह, फेलियर घोषित मत करो। मछली बेशक़ पेड़ पर न चढ़ पाये पर एक दिन वो पूरा समंदर नाप देगी। वह आपके समाज मे आपकी इज्जत आपके बेटों की तरह ही बढ़ाएगी।

अपनी बेटों और खासकर अपनी बेटियों की क्षमताओं व प्रतिभा की कद्र करें चाहे वह पढ़ाई, खेल, नाच, गाने, कला, अभिनय, व्यवसाय, खेती, बागवानी, मकेनिकल, किसी भी क्षेत्र में हो और उन्हें उसी दिशा में अच्छा करने दें क्योंकि यही बेटियां सफल होकर भविष्य में अपने बच्चों को यही संस्कार देकर एक सभ्य ओर उज्जवल समाज का निर्माण करेंगी।

बूढ़े बरगद की इतनी स्पष्ट व्याख्या से शेर को बस पर लिखे वो बड़े से वाक्य का अर्थ समझ मे आया कि आखिर इतने बड़े शब्दों में उस बस पर क्यों लिखा था की " बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ"।

यूको राजभाषा सम्मान

यूको बैंक, अंचल कार्यालय जोरहाट द्वारा पिछले तीन वित्तीय वर्षों के मेधावी एवं वरीय हिंदी में एम.ए. उत्तीर्ण विद्यार्थियों को यूको राजभाषा सम्मान प्रदान किया गया।

महादेवी वर्मा : एक परिचय

तिमाही के हिंदी साहित्यकार

महादेवी वर्मा हिन्दी भाषा की कवयित्री थीं। वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें *आधुनिक मीरा* के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें **"हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती"** भी कहा है। महादेवी ने स्वतन्त्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अन्धकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। न केवल उनका काव्य बल्कि उनके सामाजसुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे। उन्होंने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और शृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन-जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया।

वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और 1925 तक जब उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, वे एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था। कालेज में सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ उनकी घनिष्ठ मित्रता हो गई। सुभद्रा कुमारी चौहान महादेवी जी का हाथ पकड़ कर सखियों के बीच में ले जाती और कहतीं — **"सुनो, ये कविता भी लिखती हैं"**। 1932 में जब उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम॰ए॰ पास किया तब तक उनके दो कविता संग्रह नीहार तथा रश्मि प्रकाशित हो चुके थे। 1923 में उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका 'चाँद' का कार्यभार संभाला। 1930 में नीहार, 1932 में रश्मि, 1934 में नीरजा, तथा 1936 में सांध्यगीत नामक उनके चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए। 1939 में इन चारों काव्य संग्रहों को उनकी कलाकृतियों के साथ वृहदाकार में यामा शीर्षक से प्रकाशित किया गया। उन्होंने गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला सभी क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किये। इसके अतिरिक्त उनकी 18 काव्य और गद्य कृतियां हैं जिनमें **मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी, शृंखला की कड़ियाँ और अतीत के चलचित्र** प्रमुख हैं।

उन्होंने खड़ी बोली हिन्दी की कविता में उस कोमल शब्दावली का विकास किया, इसके लिए उन्होंने अपने समय के अनुकूल संस्कृत और बांग्ला के कोमल शब्दों को चुनकर हिन्दी का जामा पहनाया। संगीत की जानकार होने के कारण उनके गीतों का नाद-सौंदर्य और पैनी उक्तियों की व्यंजना शैली अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरूआत की और अन्तिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। उन्हें हिन्दी साहित्य के सभी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। भारत के साहित्य आकाश में महादेवी वर्मा का नाम ध्रुव तारे की भाँति प्रकाशमान है। 27 अप्रैल 1982 को भारतीय साहित्य में अतुलनीय योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से इन्हें सम्मानित किया गया था।

महादेवी वर्मा की कविता को सुनने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें।

अज्ञेय साहित्य जगत का बहुत आदरणीय नाम है। वे सेतु कवि हैं। हिन्दी जगत में छायावाद के स्वर्ण युग से लेकर नई कविता आउयर साठोत्तरी कविता की पुत्रियों तक वे विन्ध्याचल की भांति फैले हुए हैं।साहित्य में अज्ञेय के साथ प्रयोगवाद का पदार्पण हुआ। इनसे जुड़कर नई कविता आई। उन्हें प्रयोगवाद का प्रवर्तक(प्रथम नहीं) और नई कविता का शलाका पुरुष कहा गया है। उनका पूरा नाम सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' है। उनका जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तरप्रदेश के कुशीनगर में हुआ था।

अज्ञेय की छवि एक विवादास्पद कवि की भी रही है। उन्होंने उत्तर-छायावादी कवियों के साथ काव्य जगत में प्रवेश किया जब आवेगमयी उच्छवासयुक्त कविता लिखी जा रही थी। अज्ञेय की कविता-यात्रा की शुरुआत गीत सृजन से ही होती है-'भग्नदूत' से 'पूर्वा' तक। अज्ञेय के गीत-काव्य को अगर वस्तुपरक व्यापक दृष्टि से देखा जाए तो प्रमुखत: वह नर-नारी के प्रेम पर आधारित है। अज्ञेय मूलत: गीतकार कवि हैं। उनके काव्य में गीत की आत्मपरकता तथा अनुभूति की लय अनुस्यूत है, भले ही वह स्वर-ताल-लय, टेक अंतरा आदि के निर्वाह में पूर्ण अनुकूल नहीं हैं। वे एक सफल संपादक हैं, आलोचक हैं, कथाकार हैं पर इस हर होने के पीछे उनका 'कवि मनीषी' ही है।

अज्ञेय की यह मान्यता की सृष्टि में चिंतन का मूल विषय ही स्त्री-पुरुष का चिरन्तन प्रेम था, फ्रायड की मान्यता के अनुकूल है। मनोवैज्ञानिक यथार्थ के नाम प्रयोगवाद में जो भी चित्रण अज्ञेय ने किए हैं उनपर फ्रायड का प्रभाव स्पष्ट है। भावात्मक और अभिव्यंजनात्म दोनों दृष्टियों से प्रतीक का काव्यात्मक मूल्य है। अज्ञेय कविता में प्रटीक और बिम्ब के प्रयोग प्रभावशाली हैं।

अज्ञेय के कई संकलनों के नाम भी प्रतीकात्मक हैं। इत्यलम छायावादी रचनाओं की समाप्ति का प्रतीक है तो 'आँगन के पार द्वार' से आध्यामिकता ध्वनित होती है। अज्ञेय की प्रतीक योजना में पर्याप्त विविधता है। प्रतीकों के माध्यम से सत्यान्वेषण करते हुए उन्होंने सौंदर्यानुभूति और जीवनानुभूति को मूर्त रूप प्रदान किया है।

अज्ञेय की कविता की सर्वाधिक मूल्यवान वस्तु रोमान की है जिसमें काव्यमूल्यों की अभिव्यक्ति को खुलकर खेलने-खिलखिलाने का मुक्त स्वर मिला है। उनकी कविता में कॉन्ट्रास्ट -कॉन्टेन्ट-क्राफ्ट के उपकरणों का, आत्म-अनुभव का अनुसंधान और उसका क्षण-पटल पर अंकन 'हरा अँधकार' में लक्ष्य-लक्ष्यार्थ है। अज्ञेय के शब्दों में-

'भाषा की शक्ति
यह नहीं कि उसके सहारे
सम्प्रेषण होता है
शक्ति इसमें है कि उसके सहारे
वह संबंध बनाता है जिसमें
सम्प्रेषण सार्थक बनाता है।'

अज्ञेय की रचनाओं को सुनने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें।

मोटूरि सत्यनारायण : एक परिचय

आज़ादी का अमृत महोत्सव

तिमाही के विशेष व्यक्तित्व

मोटूरि सत्यनारायण (2 फरवरी 1902 - 6 मार्च 1995) दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार आन्दोलन के संगठक, हिन्दी के प्रचार-प्रसार-विकास के युग -पुरुष, महात्मा गांधी से प्रभावित एवं गाँधी-दर्शन एवं जीवन मूल्यों के प्रतीक, हिन्दी को राजभाषा घोषित कराने तथा हिन्दी के राजभाषा के स्वरूप का निर्धारण कराने वाले सदस्यों में दक्षिण भारत के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक थे। वे दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा तथा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के निर्माता भी हैं। सन 1947 तक वे भारतीय संविधान सभा के सदस्य रहे।

श्री मोटूरि सत्यनारायण का जन्म आन्ध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के दोण्डपाडु ग्राम में हुआ था। प्राथमिक शिक्षा के बाद उन्होने मछलीपत्तनम के नेशनल कॉलेज से अंग्रेजी, तेलुगु और हिन्दी की शिक्षा ली। उन्होंने इन तीनों भाषाओं में धाराप्रवाह बोलने की क्षमता अर्जित कर ली। इसके बाद उन्होने एक स्वयंसेवक के रूप में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा को अपनी सेवाएँ देना शुरू की और धीरे-धीरे इसके सचिव एवं मुख्य-सचिव भी बने। सन 1936 से 1961 तक उनका एक प्रमुख कार्य दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार करना रहा। उनका विवाह सूर्यकान्ता देवी से हुआ। उनके तीन पुत्र और चार पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं।

सन् 1940 से 1942 ई0 तक भारत में महात्मा गांधी के नेतृत्व में व्यक्तिगत सत्याग्रह और भारत छोड़ो आन्दोलन चला। उस काल में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना स्वाधीनता-आन्दोलन का अविभाज्य अंग था। वे दक्षिण में स्वाधीनता आन्दोलन एवं हिन्दी का प्रचार-प्रसार परिपूरक थे। आन्दोलन में भाग लेने के कारण उन्हें बन्दी बनाया गया। मोटूरि सत्यनारायण जी ने जेल में रहकर हिन्दी प्रचार का कार्य जारी रखा। जेल से मुक्त होने पर आपने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक योजनाएँ बनाईं इन योजनाओं में केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण मंडल योजना, दक्षिण के साहित्य की प्रकाशन योजना एवं कला भारती की योजना आदि सर्वविदित हैं।

पद्मभूषण डॉ० मोटूरि सत्यानारायण के नाम पर एक साहित्यिक पुरस्कार है जो भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत केन्द्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा किसी ऐसे भारतीय मूल के विद्वान को दिया जाता है जिसने विदेश में हिन्दी भाषा या साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया हो। इस पुरस्कार का प्रारंभ तमिलनाडु के हिंदी सेवी एवं विद्वान मोटूरि सत्यनारायण के नाम पर 1989 में हुआ था। पहला पद्मभूषण डॉ० मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार वर्ष 2002 में कनाडा के हरिशंकर आदेश को दिया गया था। इस पुरस्कार में एक लाख रुपये नकद, एक स्मृतिचिह्न, प्रशस्ति पत्र और शाल शामिल हैं। यह पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति द्वारा स्वयं प्रदान किया जाता है।

मोटूरि सत्यानारायण के बारे में जानने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें।

डॉ. के शिवा रेड्डी : एक परिचय

माह के तेलुगु साहित्यकार

तेलुगु भाषा के सुप्रसिद्ध साहित्यकार **डॉ. के शिवा रेड्डी** का जन्म 1943 में आंध्र प्रदेश के कारुमुरिवारी पालम गाँव में हुआ। उनके छह कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं। रक्तम सूर्युदु के लिए उन्हें फ्री वर्स फ्रंट पुरस्कार से अलंकृत किया गया। उन्होंने अपनी कविता कृति **मोहना-ओ-मोहना** तेलुगु के लिए 1996 में साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता। और 2018 में उनके कविता संग्रह **पक्काकी ओटिगिलाइट** के लिए के.के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा आयोजित वर्ष 2018 का 28वां **सरस्वती सम्मान** सरस्वती सम्मान से उन्हें सम्मानित किया गया।

के. शिव रेड्डी विवेक वर्धिनी कॉलेज, हैदराबाद के सेवानिवृत्त प्राचार्य थे और उन्होंने वहां पैंतीस साल तक अंग्रेजी पढ़ाया। उन्होंने अफ्रीकी और यूरोपीय कविताओं का तेलुगु में अनुवाद भी किया है।

साक्षात्कार देखने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें।

महाश्वेता देवी : एक परिचय

माह के बंगला साहित्यकार

महाश्वेता देवी का जन्म **14 जनवरी 1926** को अविभाजित भारत के ढाका में हुआ था। उनके पिता मनीष घटक एक कवि और एक उपन्यासकार थे और उनकी माता धारीत्री देवी भी एक लेखकि का और सामाजिक कार्यकर्ता थीं। उनकी स्कूली शिक्षा ढाका में हुई। भारत विभाजन के समय किशोरवस्था में ही उनका परिवार पश्चिम बंगाल में आकर बस गया। बाद में उन्होने विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन से स्नातक (प्रतिष्ठा) अंग्रेजी में किया और फिर कोलकाता विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर अंग्रेजी में किया। कोलकाता विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में मास्टर की डिग्री प्राप्त करने के बाद एक शिक्षक और पत्रकार के रूप में आपने अपना जीवन शुरू किया। 14 जनवरी 2018 को महाश्वेता देवी की 92 वें जन्मदिवस पर गूगल ने उन्हें सम्मान देते हुए उनका गूगल डूडल बनाया।

महाश्वेता देवी का नाम ध्यान में आते ही उनकी कई-कई छवियां आंखों के सामने प्रकट हो जाती हैं। दरअसल उन्होंने मेहनत व ईमानदारी के बलबूते अपने व्यक्तित्व को निखारा। उन्होंने अपने को एक पत्रकार, लेखिका, साहित्यकार और आंदोलनधर्मी के रूप में विकसित किया।

महाश्वेता जी ने कम उम्र में लेखन शुरू किया और विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं के लिए लघु कथाओं का महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी पहली उपन्यास, "नाती", 1957 में अपनी कृतियों में प्रकाशित किया गया था **'झाँसी की रानी'** महाश्वेता देवी की प्रथम गद्य रचना है। जो 1956 में प्रकाशन में आया। स्वयं उन्हीं के शब्दों में, **"इसको लिखने के बाद मैं समझ पाई कि मैं एक कथाकार बनूँगी।"** अपनी नायिका के अलावा लेखिका ने क्रांति के तमाम अग्रदूतों और यहाँ तक कि अंग्रेज अफसर तक के साथ न्याय करने का प्रयास किया है।

उनकी कुछ महत्वपूर्ण कृतियों में **'नटी', 'मातृछवि ', 'अग्निगर्भ' 'जंगल के दावेदार'** और **'1084 की मां', माहेश्वर, ग्राम बांग्ला** हैं। पिछले चालीस वर्षों में,उनकी छोटी-छोटी कहानियों के बीस संग्रह प्रकाशित किये जा चुके हैं और सौ उपन्यासों के करीब (सभी बंगला भाषा में) प्रकाशित हो चुकी है।इनकी कई रचनाओं पर फ़िल्म भी बनाई गई। इनके उपन्यास **'रुदाली '** पर कल्पना लाज़मी ने 'रुदाली' तथा **'हजार चौरासी की माँ'** पर इसी नाम से 1998 में फिल्मकार गोविन्द निहलानी ने फ़िल्म बनाई। इन्हें **1979 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1986 में पद्मश्री ,1997 में ज्ञानपीठ पुरस्कार** से सम्मानित किया गया। ज्ञानपीठ पुरस्कार इन्हें नेल्सन मंडेला के हाथों प्रदान किया गया था। इस पुरस्कार में मिले 5 लाख रुपये इन्होंने बंगाल के पुरुलिया आदिवासी समिति को दे दिया था। साहित्य अकादमी से पुरस्कृत इनके उपन्यास **'अरण्येर अधिकार'** आदिवासी नेता बिरसा मुंडा की गाथा है। उपन्यास '**अग्निगर्भ**' में नक्सलबाड़ी आदिवासी विद्रोह की पृष्ठभूमि में लिखी गई चार लंबी कहानिया है। 28 जुलाई 2016 को कोलकाता में उनका देहावसान हो गया।

साक्षात्कार देखने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें।

युवा दिवस

आज़ादी का अमृत महोत्सव

माह के विशेष व्यक्तित्व

स्वामी विवेकानन्द वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु थे। उनका वास्तविक नाम **नरेन्द्र नाथ दत्त** था। स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी सन् 1863 को कलकत्ता में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके बचपन का घर का नाम वीरेश्वर रखा गया, किन्तु उनका औपचारिक नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। पिता विश्वनाथ दत्त कलकत्ता हाईकोर्ट के एक प्रसिद्ध वकील थे।

उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् 1893 में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। **भारत** का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदान्त दर्शन अमेरिका और यूरोप के हर एक देश में स्वामी विवेकानन्द की वक्तृता के कारण ही पहुँचा। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी । वे रामकृष्ण परमहंस के सुयोग्य शिष्य थे।

कलकत्ता के एक कुलीन बंगाली कायस्थ परिवार में जन्मे विवेकानन्द आध्यात्मिकता की ओर झुके हुए थे। बालक नरेन्द्र के मन में बचपन से ही धर्म एवं अध्यात्म के संस्कार गहरे होते गये। वे अपने गुरु रामकृष्ण देव से काफी प्रभावित थे। रामकृष्ण की मृत्यु के बाद विवेकानन्द ने बड़े पैमाने पर भारतीय उपमहाद्वीप की यात्रा की और ब्रिटिश भारत में तत्कालीन स्थितियों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया। बाद में विश्व धर्म संसद 1893 में भारत का प्रतिनिधित्व करने, संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए प्रस्थान किया। विवेकानन्द ने संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड और यूरोप में हिंदू दर्शन के सिद्धान्तों का प्रसार किया और कई सार्वजनिक और निजी व्याख्यानों का आयोजन किया। भारत में विवेकानन्द को एक देशभक्त सन्यासी के रूप में माना जाता है और उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। वे दर्शन, धर्म, इतिहास, सामाजिक-विज्ञान, कला और साहित्य सहित विषयों के एक उत्साही पाठक थे। इनकी वेद, उपनिषद, भगवद् गीता, रामायण, महाभारत और पुराणों के अतिरिक्त अनेक हिन्दू शास्त्रों में गहन रूचि थी। नरेंद्र ने पश्चिमी तर्क, पश्चिमी दर्शन और यूरोपीय इतिहास का अध्ययन जनरल असेम्बली इंस्टिटूशन (अब स्कॉटिश चर्च कॉलेज) में किया।

1880 में नरेन्द्र, ईसाई से हिन्दू धर्म में रामकृष्ण के प्रभाव से परिवर्तित केशव चंद्र सेन की नव विधान में शामिल हुए, नरेन्द्र 1884 से पहले कुछ बिन्दु पर, एक फ्री मसोनरी लॉज और साधारण ब्रह्म समाज जो ब्रह्म समाज का ही एक अलग गुट था और जो केशव चन्द्र सेन और देवेंद्रनाथ टैगोर के नेतृत्व में था। 1881-1884 के दौरान ये सेन्स बैंड ऑफ़ होप में भी सक्रीय रहे जो धूम्रपान और शराब पीने से युवाओं को हतोत्साहित करता था।

स्वामी विवेकानंद की आत्मकथा को देखने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें।

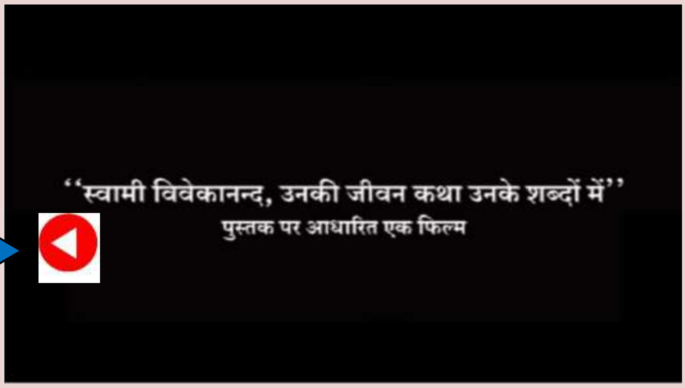

एक बार किसी शिष्य ने गुरुदेव की सेवा में घृणा और निष्क्रियता दिखाते हुए नाक-भौं सिकोड़ीं। यह देखकर विवेकानन्द को क्रोध आ गया। वे अपने उस गुरु भाई को सेवा का पाठ पढ़ाते और गुरुदेव की प्रत्येक वस्तु के प्रति प्रेम दर्शाते हुए उनके बिस्तर के पास रक्त, कफ आदि से भरी थूकदानी उठाकर फेंकते थे। गुरु के प्रति ऐसी अनन्य भक्ति और निष्ठा के प्रताप से ही वे अपने गुरु के शरीर और उनके दिव्यतम आदर्शों की उत्तम सेवा कर सके। गुरुदेव को समझ सके और स्वयं के अस्तित्व को गुरुदेव के स्वरूप में विलीन कर सके और आगे चलकर समग्र विश्व में भारत के अमूल्य आध्यात्मिक भण्डार की महक फैला सके। ऐसी थी उनके इस महान व्यक्तित्व की नींव में गुरुभक्ति, गुरुसेवा और गुरु के प्रति अनन्य निष्ठा जिसका परिणाम सारे संसार ने देखा। स्वामी विवेकानन्द अपना जीवन अपने गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस को समर्पित कर चुके थे। उनके गुरुदेव का शरीर अत्यन्त रुग्ण हो गया था। गुरुदेव के शरीर-त्याग के दिनों में अपने घर और कुटुम्ब की नाजुक हालत व स्वयं के भोजन की चिन्ता किये बिना वे गुरु की सेवा में सतत संलग्न रहे।

विवेकानन्द बड़े स्वप्नदृष्टा थे। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें धर्म या जाति के आधार पर मनुष्य-मनुष्य में कोई भेद न रहे। उन्होंने वेदान्त के सिद्धान्तों को इसी रूप में रखा। अध्यात्मवाद बनाम भौतिकवाद के विवाद में पड़े बिना भी यह कहा जा सकता है कि समता के सिद्धान्त का जो आधार विवेकानन्द ने दिया उससे सबल बौद्धिक आधार शायद ही ढूँढा जा सके। विवेकानन्द को युवकों से बड़ी आशाएँ थीं। आज के युवकों के लिये इस ओजस्वी संन्यासी का जीवन एक आदर्श है।

स्वामी विवेकानंद का जीवन परिचय बताता है कि उन्तालीस वर्ष के संक्षिप्त जीवनकाल में स्वामी विवेकानन्द जो काम कर गये वे आने वाली अनेक शताब्दियों तक पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

तीस वर्ष की आयु में स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो, अमेरिका के विश्व धर्म सम्मेलन में हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व किया और उसे सार्वभौमिक पहचान दिलवायी। **गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर** ने एक बार कहा था-

"यदि आप भारत को जानना चाहते हैं तो विवेकानन्द को पढ़िये। उनमें आप सब कुछ सकारात्मक ही पायेंगे, नकारात्मक कुछ भी नहीं।"

रोमां रोलां ने उनके बारे में कहा था-

"उनके द्वितीय होने की कल्पना करना भी असम्भव है, वे जहाँ भी गये, सर्वप्रथम ही रहे। हर कोई उनमें अपने नेता का दिग्दर्शन करता था। वे ईश्वर के प्रतिनिधि थे और सब पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेना ही उनकी विशिष्टता थी। हिमालय प्रदेश में एक बार एक अनजान यात्री उन्हें देख ठिठक कर रुक गया और आश्चर्यपूर्वक चिल्ला उठा-'शिव!' यह ऐसा हुआ मानो उस व्यक्ति के आराध्य देव ने अपना नाम उनके माथे पर लिख दिया हो।"

मुम्बई में गेटवे ऑफ़ इन्डिया के निकट स्थित स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमूर्ति

नेताजी जयन्ती

सुभाष चन्द्र बोस जन्म 23 जनवरी 1897, मृत्यु: 18 अगस्त 1945) भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी तथा सबसे बड़े नेता थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेज़ों के खिलाफ लड़ने के लिये, उन्होंने जापान के सहयोग से आज़ाद हिन्द फौज का गठन किया था' उनके द्वारा दिया गया जय हिंद का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है। **"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूँगा"** का नारा भी उनका था जो उस समय अत्याधिक प्रचलन में आया। भारतवासी उन्हें **नेता जी** के नाम से सम्बोधित करते हैं।

नेता जी ने **5 जुलाई 1943** को सिंगापुर के टाउन हाल के सामने **'सुप्रीम कमाण्डर'** के रूप में सेना को सम्बोधित करते हुए **"दिल्ली चलो!"** का नारा दिया और जापानी सेना के साथ मिलकर ब्रिटिश व कामनवेल्थ सेना से बर्मा सहित इंफाल और कोहिमा में एक साथ जमकर मोर्चा लिया।

21 अक्टूबर 1943 को सुभाष बोस ने आज़ाद हिंद फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार बनायी। जापान ने अंडमान व निकोबार द्वीप इस अस्थायी सरकार को दे दिये। सुभाष उन द्वीपों में गये और उनका नया नामकरण किया।

1944 को आज़ाद हिंद फौज ने अंग्रेजों पर दोबारा आक्रमण किया और कुछ भारतीय प्रदेशों को अंग्रेजों से मुक्त भी करा लिया। कोहिमा का युद्ध 4 अप्रैल 1944 से 22 जून 1944 तक लड़ा गया एक भयंकर युद्ध था। इस युद्ध में जापानी सेना को पीछे हटना पड़ा था और यही एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ।

6 जुलाई 1944 को उन्होंने रंगून रेडियो स्टेशन से महात्मा गांधी के नाम एक प्रसारण जारी किया जिसमें उन्होंने इस निर्णायक युद्ध में विजय के लिये उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ माँगीं।

नेताजी की मृत्यु को लेकर आज भी विवाद है। जहाँ जापान में प्रतिवर्ष 18 अगस्त को उनका शहीद दिवस धूमधाम से मनाया जाता है वहीं भारत में रहने वाले उनके परिवार के लोगों का आज भी यह मानना है कि सुभाष की मौत 1945 में नहीं हुई। वे उसके बाद रूस में नज़रबन्द थे।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की कहानी जानने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें।

विश्व हिन्दी दिवस

विश्व हिन्दी दिवस प्रति वर्ष **10 जनवरी** को मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करना तथा हिन्दी को अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है। विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिन्दी में व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं। विश्व में हिन्दी का विकास करने और इसे प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से विश्व हिन्दी सम्मेलनों की शुरुआत की गई और प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ तब से ही इस दिन को 'विश्व हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

विश्व हिन्दी दिवस का उद्देश्य विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करना, हिन्दी के प्रति अनुराग पैदा करना तथा हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में प्रस्तुत करना है।

भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी 2006 को प्रति वर्ष विश्व हिन्दी दिवस के रूप मनाये जाने की घोषणा की थी। उसके बाद से भारतीय विदेश मंत्रालय ने विदेश में 10 जनवरी 2006 को पहली बार विश्व हिन्दी दिवस मनाया था।

भारत कई तरह की भाषाओं का धनी देश है लेकिन भारत को मूल रूप से उसकी हिंदी भाषा के लिए जाना जाता है। हिंदी प्रेमियों के लिए 10 जनवरी का दिन बेहद खास होता है। अंतरराष्ट्रीय भाषा के तौर पर हिंदी को स्थापित करने का उद्देश्य है। विश्व हिंदी दिवस के मौके पर भारत समेत दुनिया के तमाम देशों में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन होता है। विश्व हिंदी दिवस के अलावा भारत राष्ट्रीय हिंदी दिवस भी मनाता है। 14 सिंतबर को राष्ट्रीय हिंदी दिवस होता है।

विश्व हिंदी दिवस दुनियाभर के भारतीय दूतावास में मनाया जाता है। पहला हिंदी दिवस नॉर्वे के भारतीय दूतावास ने मनाया गया। बाद में दूसरा और तीसरा हिंदी दिवस भारतीय नॉर्वे सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम के तत्वाधान में लेखक सुरेश चन्द्र शुक्ल की अध्यक्षता में आयोजित हुआ था।
पहला हिंदी दिवस सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को महाराष्ट्र के नागपुर में आयोजित किया गया था। पहले विश्व हिंदी सम्मेलन का उद्घाटन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने किया था। इस सम्मेलन का उद्देश्य दुनियाभर में हिंदी के प्रचार-प्रसार करना था। सम्मेलन में 30 देशों के 122 प्रतिनिधि शामिल हुए थे। जिस तारीख को पहला सम्मेलन हुआ था, उसी दिन को राष्ट्रीय हिंदी दिवस घोषित कर दिया गया।
अंग्रेजी और मंदारिन के बाद हिंदी दुनिया की व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। भाषाई विविधता के रूप में अंग्रेजी, मंदारिन और स्पेनिश के बाद, हिंदी दुनिया में चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी वैदिक संस्कृत के प्रारंभिक रूप की प्रत्यक्ष वंशज भी है।

विश्व हिन्दी दिवस समारोह

इंदौर अंचल

वाराणसी

पटना अंचल

रांची अंचल

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

21 फरवरी को पूरे विश्व में **'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस'** (International Mother Language Day) के रूप में मनाया जा रहा है। दुनिया में भाषाई और सांस्कृतिक विविधता व बहुभाषिता को बढ़ावा देने के लिए, साथ ही साथ, मातृभाषाओं से जुड़ी जागरुकता फैलाने के उद्देश्य से यह दिन मनाया जाता इस दिन को 1952 में ढाका विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अपनी मातृभाषा का अस्तित्व बनाए रखने के लिए एक विरोध प्रदर्शन किया था। यह विरोध प्रदर्शन बहुत जल्द एक नरसंहार में बदल गया जब तत्कालीन पाकिस्तान सरकार की पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर गोलियां बरसा दी। इस घटना में 16 लोगों की जान गई थी। भाषा के इस बड़े आंदोलन में शहीद हुए लोगों की याद में 17 नवंबर (नवम्बर), 1999 में यूनेस्को (United Nation) ने पहली बार अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने की घोषणा की थी। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य है कि विश्व में भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता और बहुभाषिता को बढ़ावा मिले। बांग्लादेश में इस दिन एक राष्ट्रीय अवकाश होता है। बांग्लादेश में इस दिन एक राष्ट्रीय अवकाश होता है। कह सकते हैं कि बांग्ला भाषा बोलने वालों के मातृभाषा के लिए प्यार की वजह से ही आज विश्व में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है।

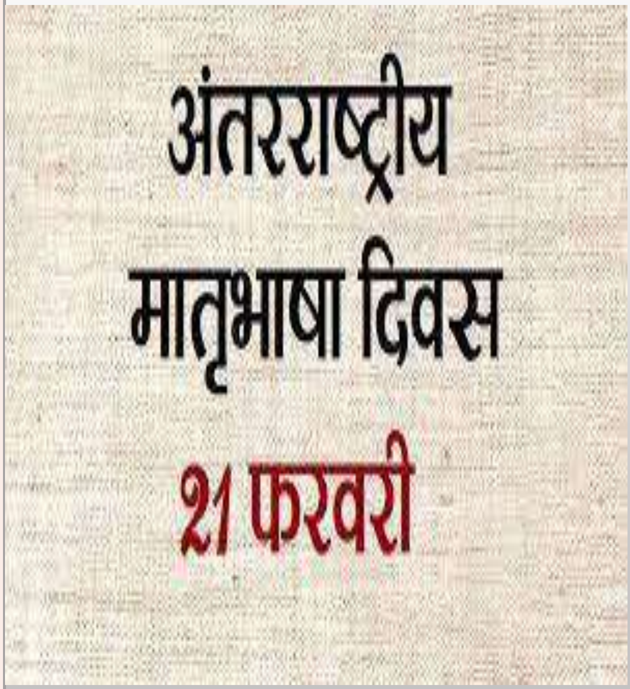

2008 को अन्तरराष्ट्रीय भाषा वर्ष घोषित करते हुए, संयुक्त राष्ट्र आम सभा ने अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के महत्व को फिर दोहराया है।

अन्तरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के बारे में जानने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

अनतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास यूको बैंक) कोलकाता द्वारा पश्चिम बंगाल में हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने में उनके योगदान के लिए दिनांक 07.03.2022 को प्रख्यात गायिका पद्मश्री श्री उषा उत्थुप को वर्ष 2021-22 तथा वास्तुशास्त्री डॉ सुरेन्द्र कपूर को वर्ष 2020-21 के लिए **विद्यासागर सम्मान** से सम्मानित किया गया। अतिथियों को पुष्पगुच्छ, शॉल, पुस्तक तथा 25,000 राशि के चेक से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार नराकास के अध्यक्ष एवं यूको बैंक के प्रबंध निदेशक एव मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सोमा शंकर प्रसाद द्वारा प्रदान किया गया। कार्यक्रम के दौरान नराकास की ओर से कैलेंडर का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर 'न्यायपालिका में हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग : चुनौतियाँ एवं समाधान' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मणिशंकर द्विवेदी, राजभाषा के निदेशक बाबू लाल मीणा सहित

कार्यक्रम को देखने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें।

जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला

नागपुर अंचल

वाराणसी अंचल

करनाल अंचल

जयपुर अंचल

जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला

लखनऊ अंचल

भागलपुर अंचल

रायपुर अंचल

कानपुर अंचल

अजमेर अंचल

गुवाहाटी अंचल

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में नराकास (बैंक), कोलकाता के तत्वावधान में यूको बैंक द्वारा दिनांक 09.03.2022 को **'महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम'** विषय पर वेब संगोष्ठी का आयोजन

किया गया।

'महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम' विषय आज की नारी के विकास से जुड़ा है और उसके रास्ते में आने वाली परेशानियों और दिक्कत से रूबरू करवाता है, किस प्रकार से किसी महिला की राह में आने वाली दिक्कतों को हटाया जा सकता है, उसकी समस्याओं के क्या समाधान हो सकते हैं, इस पर भी प्रकाश डालता है। महिला सशक्तिकरण का एक अन्य पहलू यह भी है कि महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक स्वावलंबन के लिए जो भी उपाय किए जा रहे हैं उन की पहुंच समाज के निचले तबके, दूर दराज में बसे कस्बों और गांवों की महिलाओं तक होनी चाहिए। केवल शहरों में रहने वाली महिलाओं की अर्थिक प्रगति ही महिला सशक्तिकरण नहीं है। महिला द्वारा स्वनिर्णय का अधिकार के साथ ही साथ स्वावलंबन, शारीरिक और मानसिक विकास एवं उसके प्रति समाज का सुरक्षित एवं सम्मानित दृष्टिकोण ही सच्चे अर्थों में महिलाओं को सशक्त करता है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर देशभर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

प्रधान कार्यालय

बेंगलुरु अंचल

गुवाहाटी अंचल

अगरतला अंचल

देहरादून अंचल

लखनऊ अंचल

दो परिवार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

दो परिवार एक दूसरे के पड़ोस में ही रहते थे। एक परिवार हर वक्त लड़ता था जबकि दूसरा परिवार शांति से और मैत्रीपूर्ण रहता था। एक दिन, झगड़ालू परिवार की पत्नी ने शांत पडोसी परिवार से ईर्ष्या महसूस करते हुए अपने पति से कहा, "अपने पड़ोसी के वहाँ जाओ और देखो कि इतने अच्छे तरीके से रहने के लिए वो क्या करते हैं।"

पति वहां गया, और छुप के चुपचाप देखने लगा।उसने देखा कि एक औरत फर्श पर पोछा लगा रही हैं। अचानक किचन से कुछ आवाज आने पर वो किचन में चली गई।

तभी उसका पति एक रूम की तरफ भागा। उसका ध्यान नहीं रहने के कारण फर्श पर रखी बाल्टी से ठोकर लगाने के कारण बाल्टी का सारा पानी फर्श पर फैल गया।

उसकी पत्नी किचन से वापिस आयी और अपने पति से बोली, "आई एम सॉरी, डार्लिंग। यह मेरी गलती थी कि मैंने रास्ते से बाल्टी को नहीं हटाया।"

पति ने जवाब दिया, " नहीं डार्लिंग, आई एम सॉरी। क्योंकि मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया।"

झगड़ालू परिवार का पति जो छुपा हुआ था वापस घर लोट आया। तो उसकी पत्नी ने पडोसी की खुशहाली का राज पूछा।

पति ने जवाब दिया, "उनमे और हम में बस यही अंतर हैं कि हम हमेशा खुद सही होने कि कोशिश करते हैं... एक दूसरे को गलती के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं। जबकि वो हर चीज़ के लिए खुद जिम्मेदार बनते हैं और अपनी गलती मानने के लिए तैयार रहते हैं।"

एक खुशहाल और शांतिपूर्ण संबंध के लिए जरुरी हैं कि हम अपने अहंकार(Ego) को साइड में रखे और अपने स्वयं के हिस्से के लिए व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी को ध्यान में रखे।

एक दूसरे को दोषी ठहराने से दोनों का नुकसान होता हैं और अपने संबंध भी खराब हो जाते हैं। परिवार में दूसरे की जीत भी अपनी जीत होती हैं। अगर हम बहस करके दूसरे सदस्य को नीचा दिखा दें, ये उसकी हार नहीं बल्कि आपकी हार हैं। इसीलिए परिवार को तोड़ना नहीं जोड़ना सीखना चाहिए , ऐसा करने से हम एक खुशहाल और शांति पूर्ण परिवार का हिस्सा बन पाएंगे।

एक बुढिय़ा

एक बुढिय़ा दूसरे गांव जाने के लिए अपने घर से निकली। उसके पास एक गठरी भी थी। चलते-चलते वह थक गई। थकान की वजह से उसे गठरी का बोझ भारी लगने लगा था। तभी उसने देखा कि पीछे से एक घुड़सवार चला आ रहा है। बुढिय़ा ने उसे आवाज दी। घुड़सवार पास आया और बोला, "क्या बात है अम्मा, मुझे क्यों बुलाया?"

बुढिय़ा ने कहा, "बेटा, मुझे सामने वाले गांव जाना है। बहुत थक गई हूं। गठरी उठाई नहीं जाती। तू भी शायद उधर ही जा रहा है। यह गठरी घोड़े पर रख ले। मुझे चलने में आसानी हो जाएगी।"

घुड़सवार ने कहा, "अम्मा, तू पैदल है। मैं घोड़े पर हूं। गांव अभी दूर है। पता नहीं तू कब तक वहां पहुंचेगी। मैं तो थोड़ी ही देर में पहुंच जाऊंगा। मुझे तो आगे जाना है। वहां क्या तेरा इंतजार करते थोड़े ही बैठा रहूंगा?"

यह कहकर वह चल पड़ा। कुछ दूर जाने के बाद वह सोचने लगा, "मैं भी कितना मूर्ख हूं। बुढिय़ा ढंग से चल भी नहीं सकती। क्या पता उसे ठीक से दिखाई भी देता हो या नहीं। वह मुझे गठरी दे रही थी। संभव है उसमें कीमती सामान हो। मैं उसे लेकर भाग जाता तो कौन पूछता! बेकार ही मैंने उसे मना कर दिया।"

गलती सुधारने की गरज से वह फिर बुढिय़ा के पास आकर बोला, "अम्मा, लाओ अपनी गठरी। मैं ले चलता हूं। गांव में रुककर तेरी राह देखूंगा।"

किंतु बुढिय़ा ने कहा, "न बेटा, अब तू जा। मुझे गठरी नहीं देनी।"

यह सुन घुड़सवार बोला, "अभी तो तू कह रही थी कि ले चल! अब ले चलने को तैयार हुआ तो गठरी दे नहीं रही। यह उलटी बात तुझे किसने समझाई?"

बुढिय़ा मुस्कराकर बोली, "उसी ने समझाई है जिसने तुझे यह समझाया कि बुढिय़ा की गठरी ले ले। जो तेरे भीतर बैठा है, वही मेरे भीतर भी बैठा है। जब तू लौटकर आया तभी मुझे शक हो गया कि तेरी नीयत में खोट आ गया है।"

हमारे मन के विचारों की तरंगे सामने वाले के मन पर तुरंत प्रतिबिम्बत होती है.... अत:सदैव अच्छे विचारों, आदर सूचक भावनाओं से, सकारात्मक सोच से सामने वाले के लिये विचार करिये फिर देखिये आपके प्रति लोगों की कैसी अभिव्यक्ति होती है।

भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएँ विभाग के नियत्रणाधीन बैंकों, बीमा कंपनियों एवं वित्तीय संस्थानों के कोलकाता स्थित कार्यालय प्रमुखों एवं राजभाषा अधिकारियों के लिए दिनांक 07.03.2022 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला एवं संगोष्ठी

अनानास के फायदे

अनानास (अंग्रेज़ी:*पाइनऍप्पल*, वैज्ञा:*Ananas comosus*) एक खाद्य उष्णकटिबन्धीय पौधे एवं उसके फल का सामान्य नाम है हालांकि तकनीकी दृष्टि से देखें, तो ये अनेक फलों का समूह विलय हो कर निकलता है। यह मूलतः पैराग्वे एवं दक्षिणी ब्राज़ील का फल है। अनानास एक स्वादिष्ट फल है। ये स्वाद में हल्का खट्टा होता है। अनन्नास को ताजा काट कर भी खाया जाता है और शीरे में संरक्षित कर या रस निकाल कर भी सेवन किया जाता है। इसे खाने के उपरांत मीठे के रूप में सलाद के रूप में एवं फ्रूट-कॉकटेल में मांसाहार के विकल्प के रूप में प्रयोग भी किया जाता है। मिष्टान्न रूप में ये उच्च स्तर के अम्लीय स्वभाव का होता है।

अनानास के औषधीय गुण भी बहुत होते हैं। ये शरीर के भीतरी विषों को बाहर निकलता है। इसमें क्लोरीन की भरपूर मात्रा होती है। साथ ही पित्त विकारों में विशेष रूप से और पीलिया यानि पांडु रोगों में लाभकारी है। ये गले एवं मूत्र के रोगों में लाभदायक है। इसके अलावा ये हड्डियों को मजबूत बनाता है। अनन्नास में प्रचुर मात्रा में मैग्नीशियम पाया जाता है। यह शरीर की हड्डियों को मजबूत बनाने और शरीर को ऊर्जा प्रदान करने का काम करता है। एक प्याला अनन्नास के रस-सेवन से दिन भर के लिए आवश्यक मैग्नीशियम के 75% की पूर्ति होती है। साथ ही ये कई रोगों में उपयोगी होता है। अनानास औषधीय गुणों के लिए भी जाना जाता है। इस फल में पाया जाने वाला ब्रोमिलेन सर्दी और खांसी, सूजन, गले में खराश और गठिया में लाभदायक होता है। यह पाचन में भी उपयोगी होता है। अनन्नास अपने गुणों के कारण नेत्र-ज्योति के लिए भी उपयोगी होता है। दिन में तीन बार इस फल को खाने से बढ़ती उम्र के साथ आंखों की रोशनी कम हो जाने का खतरा कम हो जाता है।

आस्ट्रेलिया के वैज्ञानिकों के शोधों के अनुसार यह कैंसर के खतरे को भी कम करता है। ये उच्च एंटीआक्सीडेंट का स्रोत है व इसमें विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और साधारण ठंड से भी सुरक्षा मिलती है। इससे सर्दी समेत कई अन्य संक्रमण का खतरा कम हो जाता है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आयुर्वेद में अनानास के गुणों के बारे में बहुत ही उत्तम बातें लिखी गई हैं। अपच, पेट में कीड़े, बुखार, यौन रोग, पीलिया सहित कुष्ठ रोग में अनानास से लाभ पा सकते। प्राचीन समय से ही अनानास का इस्तेमाल पाचन और सूजन संबंधी समस्याओं के लिए किया जाता रहा है।

अनानास में कई तरह के विटामिन और मिनरल होते हैं। ये इम्यूनिटी को बढ़ाते हैं। इसके अलावा इसमें मौजूद एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण सूजन कम करने में मदद करते हैं। अनानास खाने से वायरल और बैक्टीरियल दोनों संक्रमणों का खतरा भी कम होता है। बुढ़ापे में गठिया होना एक आम समस्या है। इस दौरान जोड़ों में सूजन हो जाती है।
इसमें एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो सूजन और गठिया वाले लोगों को दर्द से राहत दे सकते हैं। हड्डियों के लिए लाभकारी अनानास कैल्शियम और मैंगनीज सहित कई पोषक तत्वों का एक समृद्ध स्रोत है। ये पोषक तत्व, ऑस्टियोपोरोसिस को रोकने में मदद करते हैं। ये बुढ़ापे की एक आमतौर पर होने वाले जोड़ों के दर्द और हड्डियों को मजबूत बनाते हैं। विटामिन सी और बीटा कैरोटीन से भरपूर ये फल त्वचा के लिए बेहद फायदेमंद होता हैं। इसे खा भी सकते हैं या सीधे त्वचा पर लगा जा सकते हैं। ये सूरज की हानिकारक किरणों से लड़ने, झुर्रियों को कम करने और त्वचा को निखारने में मदद करता है। पथरी अगर आपकी किडनी में पथरी है तो इसका सेवन आपके लिए फायदेमंद हो सकता है। इसके लिए अनानास के जूस का सेवन करें। ये पथरी बाहर निकालने में मदद करता है। अनानास में आयरन होता है। ये शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा को बढ़ाता है। इससे खून बनने में मदद मिलती है। इसलिए ये एनीमिया को दूर करने में मदद करता है। अनानास के रस में शहद मिलाकर पीने से बुखार कम करता है।

अनानास के फायदे देखने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें

प्रधान कार्यालय में होली मिलन समारोह

विदाई

एस. के. सचदेवा
अंचल प्रबंधक
चंडीगढ़ अंचल

ए. के. श्रीवास्तव
मुख्य प्रबंधक
हुगली अंचल

बिमल कान्ति भट्टाचार्या
विशेष सहायक, आलमगंज शाखा
दुर्गापुर अंचल

माया रानी खा
एचकेपी , आमदपुर शाखा
दुर्गापुर अंचल

सभी प्रिय यूकोजन साथियों को स्वस्थ सेवानिवृत्त जीवन की शुभकामनाएं

आज़ादी का अमृत महोत्सव

नारी शक्ति को समर्पित सुधीर सजल की ग़ज़ल

मैं पत्थर हूँ

मैं पत्थर हूँ मेरे सीने से एक झरना निकलता है
मैं हूँ वो रात जिसकी कोख में सूरज भी पलता है
है कितनी आग मेरे दिल में तुमको क्या बताएँ हम
मेरी आँखों का पानी देखकर लोहा पिघलता है
ये मेरे हाथ के छाले नहीं ये मेरी क़िस्मत हैं
अगर सहला दूँ तो कंकड़ भी हीरे सा निखरता है
लगा सकता हमारा मोल कैसे ये ज़माना भी
हमारे पास जो आ जाए वो सोने में ढलता है
मैं जब तक हूँ, नहीं मायूस होना ज़िंदगी से तुम
अँधेरा देख मुझको रोशनी बन कर बिखरता है

***

"यूको मासिकी, यूको संगम, यूको टावर एवं अनुगूँज" में प्रकाशनार्थ सामग्री आमंत्रित है"

सभी यूकोजनों से अनुरोध है कि "यूको मासिकी, यूको संगम, यूको टावर एवं अनुगूंज" के आगामी अंक के लिए सामग्री हमें प्रेषित करें। यह सामग्री शाखा/कार्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियों/कार्यक्रमों/बैठकों आदि के फोटोग्राफ एवं एक संक्षिप्त रिपोर्ट, ज्ञानवर्धक लेख, बैंक के उत्पाद एवं सरकारी योजनाओं से संबंधित लेख, ग्राहक एवं स्टाफ की सफलता की कहानी, शाखा की सफलता की कहानी आदि के रूप में भेज सकते हैं।

पाठकगण प्रकाशनार्थ सामग्री अपने व्यक्तिगत विवरण एवं एक पासपोर्ट आकार की फोटो के साथ राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय के ई-मेल horajbhasha.calcutta@ucobank.co.in पर प्रेषित करें।

यूको एमएसएमई ऋण
दे आपके सपनों को साकार करने का दम

MAKE IN INDIA

प्रधानमंत्री mudra योजना
पूँजी, सफलता की कुंजी

- निर्माण, व्यापार एवं सेवाओं/कृषि से संबंधित कार्यकलापों में गैर–कृषि उद्यमों के लिए
- अधिकतम ऋण राशि रु. 10 लाख

STAND UP India
Endeavour and Prosper

- 18 वर्ष से अधिक उम्र के अनु. जाति/अनु. जनजाति/महिला उद्यमियों द्वारा निर्माण, व्यापार या सेवा क्षेत्र में नए उद्यम की स्थापना हेतु रु. 10 लाख से रु. 100 लाख तक के बीच संयुक्त ऋण

यूको ट्रेडर

- व्यक्ति विशेष, प्रॉप्राइटरशिप, पार्टनरशिप, एचयूएफ, लिमिटेड कंपनी के लिए कार्यशील पूँजी एवं मियादी ऋण
- पात्रता मानदंड के आधार पर रु. 1 लाख से रु. 750 लाख तक
- आकर्षक ब्याज दर

यूको उद्योग बंधु

- निर्माण/सेवा उद्यमों के लिए आवश्यकता आधारित कार्यशील पूंजी और सावधि ऋण
- 108 महीने तक चुकौती
- महिला उद्यमियों को ब्याज में 0.50% की छूट
- सीजीटीएमएसई कवरेज उपलब्ध

वर्ष 1943 से राष्ट्र की सेवा में

www.ucobank.com

टोल–फ्री हेल्पलाइन : 1800 103 0123

यूको बैंक **UCO BANK**

(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust